रसखान का काव्य वैशिष्ट्य

डॉ. संतोष कौल काक
एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष - हिंदी विभाग
बी. एम. रुइया गर्ल्स कॉलेज, मुम्बई।

भक्ति को महत्वपूर्ण बनाने में कबीर , जायसी , सूर , तुलसी , नाभादास , केशवदास , मीराबाई आदि के साथ – साथ कविवर रसखान का प्रदेय भी अत्यंत महत्वपूर्ण है . रसखान भक्ति – क्षेत्र के परमोज्जवल नक्षत्र हैं . यूँ रसखान का कृतित्व सीमित है , उनका काव्य – क्षेत्र भी बहुत व्यापक नहीं है . परन्तु कृतिकार की कीर्ति उसकी रचनाओं की मात्रा पर नहीं अपितु उसके भाव एवं काव्य – सौन्दर्य पर आश्रित होती है . रसखान के काव्य – सौन्दर्य पर विचार करें तो पाएँगे कि उनका भाव - सौन्दर्य अत्यंत सबल है . विश्वनाथ प्रसाद मिश्रजी के अनुसार , "स्वच्छंद काव्य भावभावित होता है , बुद्धि – बोधित नहीं . इसलिए आन्तरिकता उसका सर्वोपरि गुण है ... स्वच्छंद वृत्ति के कवियों की अनुभूति ही उनका मुख्य आधार है , उसी के सहारे उनकी सारी कृति की छान – बीन की जा सकती है . "1.

रसखान के काव्य में श्रृंगार - भाव की प्रधानता दिखाई देती है . श्रृंगार इनके काव्य का प्रमुख प्रतिपाद्य है . अतः प्रणय – संवेदना की इनके काव्य में प्रधानता रही है . उसमें भी संयोग – पक्ष के चित्रण में उनका मन अधिक रमा है. वियोग की गहनता का इनमे अभाव पाया जाता है . इनका वियोग भी संयोग संयोग से मिश्रित – सा है . संयोग – पक्ष में ये अवश्य शारीरिक अभेद की बात करते हैं , पर इस अभेद की इच्छा में वासना की दुर्गन्ध नहीं है , अपितु आत्मसमर्पण की पराकाष्ठ के उसमें दर्शन होते हैं . बिहारी ' श्रृंगारी कवि ' हैं तो ये ' भक्ति श्रृंगार के गायक ' . देव को सूर के साथ ही रसखान ने भी प्रभावित किया ऐसा डॉ. नगेन्द्र

ने माना है . मतिराम के ग्रामीण नारी – जीवन व ग्राम्य – जीवन के चित्रण पर भी रसखान की छाप दीखती है . रीतिकालीन श्रृंगारी कवियों पर इनका गहरा प्रभाव दिखाई देता है . रीतिमुक्त धारा के अग्रणी कवि रसखान को कई समीक्षकों ने भक्त – कवियों की श्रेणी में नहीं माना , इस श्रेणी से उनका यह बहिष्कार उचित नहीं लगता , क्योंकि रीतिकालीन श्रृंगारी कवियों की बाह्य कृत्रिमताओं और नख – शिख वर्णन की रूढ परिपाटी या , उनके काव्य में निहित चमत्कार – सृष्टि से रसखान अछूते रहे हैं . फिर इनका काव्य रीतिकालीन कवियों की भांति किसी विशिष्ट वर्ग के लिए रचित भी नहीं है , वह तो सामान्य व विशिष्ट दोनों वर्गों के लिए है . भक्तों के लिए भी और रसिकों के लिए भी . रसखान के काव्य में अपने प्रिय के प्रति सहज एवं पूर्ण आत्मसमर्पण का भाव है . इसीलिए गोपियों के बाह्य वर्णन की अपेक्षा उनके आतंरिक हृदयगत भावों को अभिव्यक्त करने में उनकी रूचि अधिक रही है . ऐसा करते हुए भी यदि बाद के कवियों का पथ – प्रदर्शन इन्होने किया तो यह इनकी मौलिक प्रतिभा का परिचायक है , जिसके कारण ये साहित्य में एक विशेष स्थान के अधिकारी हैं .

इनका दूसरा प्रतिपाद्य है भक्ति . कृष्ण और गोपियों की विविध लीलाओं के माध्यम से कवि ने अपनी हृदयगत भावनाओं को अभिव्यक्ति प्रदान की है . उन्होंने कृष्ण - भक्तों के प्रिय विषय कृष्ण को तो अपनाया किन्तु उनकी काव्य – शैली गीति – पद्धति को नहीं . आदिकाव्य से चली आ रही ब्रह्म व भाटों की कवित्त – सवैयों की शैली जो कि भक्तिकाल में लुप्तप्राय हो चली थी (हालांकि इस शैली में तुलसी ने ' कवितावली ' लिखी भी). परन्तु यह धारणा ही बन गयी थी कि रूप – माधुर्य एवं लीलाओं का वर्णन केवल गीतों या पदों में ही हो सकता है . इस विचारधारा को माननेवाले कृष्ण भक्त कवियों के बीच रसखान ने उनके प्रचलित मार्ग को छोड़कर विस्मृत प्राय काव्य रचना – शैली को ग्रहण करते हुए अपने आराध्य के प्रति कवित्त – सवैयों में प्रेम अभिव्यक्त करते हुए यह दिखा दिया कि इस शैली में भी उसी छटा , रस , लालित्य को उपस्थित किया जा सकता है . उनकी इसी

विशिष्टता को अपनाकर घनानंद , पद्माकर आदि श्रेष्ठ कवियों ने आगे चलकर कवित्त – सवैयों की धाक जमा दी . रसखान के कवित्त – सवैयों का शब्द – माधुर्य इतना कर्णप्रिय और प्रभावशाली है , सरस है कि सरस कविता को साहित्यप्रेमी ' रसखान ' के नाम से पुकारने लगे . उदहारण के लिए कथन दृष्टव्य है कि जब किसी से यह कहना हो की सरस कविता सुनाओ तो कहा जाता है कि – ' कोई रसखान सुनाओ ' .

यही नहीं अपितु भक्तिकाल में उत्पन्न होकर भी एक नयी काव्यधारा यानि ' स्वच्छंद काव्यधारा ' को जन्म देकर उन्होंने अपनी असाधारण प्रतिभा का परिचय भी दिया . रीतिमुक्त स्वच्छंद काव्यधारा के गायकों घनानंद , ठाकुर , आलम , बोधा , द्विजदेव आदि के वे प्रवर्तक हैं . रसखान इस धारा के ऐसे रत्न हैं जो स्वच्छंद – काव्यधारा को जन्म देकर भी स्वच्छंद ही रहे . किसी के अनुसरण की परवाह न करते हुए , ऊहात्मकता को नकार अबाध गति से चलते रहे .

मीराँ की तरह अपूर्व भाव – माधुर्य एवं सहज आत्मसमर्पण रसखान में भी दिखाई देता है . फर्क सिर्फ इतना है कि मीरा में विरह का भाव अधिक है , वह भी गेय शैली में और रसखान में संयोग – वर्णन अधिक है , शैली है कवित्त – सवैया की . अपने प्रिय कृष्ण की मस्ती व श्रृंगार की कोमल भावनाओं के लिए उन्होंने कवित्त -सवैयों को अपनाया . सूर की तरह उन्होंने वात्सल्य का कोना – कोना नहीं झाँका , केवल दो पदों की रचना की जो संख्या में कम होने पर भी अत्यंत मार्मिक एवं प्रभावशाली हैं .

ब्रह्म की महत्ता व अपनी लघुता जानकार स्वयं को पापी तथा प्रभु को पतित – पावन कहने की , स्वयं का उद्धार करने की भक्तों की परम्परागत कामना जैसे – ' प्रभु सब पतितन को टीको ' , या ' मो सम कौन कुटिल ' आदि रही है. अन्य रचनाकार जैसे ' सूर के प्रभु ' , ' सूर के स्वामी ' , ' परमानंद के प्रभु ' , ' छीत के स्वामी ' जैसी पदावली का प्रयोग करते हैं . रसखान ने इस बात को परंपरा या सिद्धांत की तरह नहीं अपनाया . भक्तों या अन्य कवियों की सामान दैन्य या दास्य

– भाव अपनाने की अपेक्षा कृष्णमय होकर उन्होंने अपनी रचनाओं में एक रमणीयता उत्पन्न कर दी . उनकी यह विशिष्टता उन्हें अन्य भक्तों से अलग स्थान दिलाती है . तुलसीदास जिस तरह यह कामना करते हैं कि ' जेहि जोनि जन्मौं कर्मबस तहँ रामपद अनुरागऊं ' वैसे ही रसखान भी प्रत्येक जन्म में चाहे फिर वह मनुष्य जन्म हो , पशु – पक्षी का हो , पत्थर के रूप में हो या जो भी हो – कृष्ण के सामीप्य की चाहना करते हैं .

मानुष हौं तो वही रसखानि, बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन |

जो पशु हौं तो कहा बस मेरो , चरौं नित नन्द की धेनु मंझारन ||

वे कृष्ण में लय हो जाना चाहते हैं . वैकुण्ठ पाने की कामना रसखान में नहीं दिखाई देती . कृष्ण से पृथकत्व रसखान के लिए अकल्पनीय बात है . वे निष्काम भक्ति का समर्थन करते हुए स्वर्ग या मोक्ष नहीं , श्रीचरणों का सान्निध्य चाहते हैं . उत्कृष्ट कृष्णानुराग , उन चरणों में अनुरक्ति , निष्ठा , आत्मसमर्पण रसखान की भक्ति की विशिष्टता के द्योतक हैं .

रसखान ऐसे भक्त हैं जिन्होंने अपने उपास्य को उपासक के समकक्ष मानवीय धरातल पर प्रस्तुत किया , दिव्य धरातल पर कम . परब्रह्म का साक्षात् रूप होते हुए भी उनके आराध्य भक्त की भावभूमि पर उतरकर कभी कुंजों में राधिका के पाँव पलोटने में लगे हैं , कभी रास में मग्न हैं . उनके कृष्ण गोपियों को मर्यादा का पाठ नहीं पढ़ाते .फलतः भक्त और भगवान का भेद तथा भक्ति की मर्यादा और शास्त्रीयता का विलोप हो गया दिखाई देता है .

हिंदी साहित्य में अनेक मुसलमान कवि हुए हैं , कृष्ण या अन्य देवी – देवताओं के अनेक भक्त भी हुए हैं . हिंदी के मुसलमान कवियों जैसे कि कुतुबन , मंझन , जायसी , उसमान , नूर मुहम्मद आदि ने प्रेमतत्व का मार्मिक निरूपण प्रबंधात्मक कथा – काव्यों के माध्यम से किया . भारतीय कथानकों के द्वारा सूफ़ी सिद्धांतों की व्यंजन की गयी . परन्तु कृष्ण के प्रेम में लय होकर मुसलमानीपन का रसखान

सा त्याग कोई भी नहीं कर पाया . हिन्दुप्रेमी जायसी भी नहीं. जायसी के विस्तृत काव्य – फलक की तुलना में रसखान का काव्य – क्षेत्र सीमित है पर भाव – व्यंजना या लोकप्रियता में रसखान उनसे किसी प्रकार कम नहीं हैं . भक्तियुगीन मुसलमान कवियों में जायसी के बाद रसखान ही महत्वपूर्ण हैं . यूँ रसखान किसी हिन्दू भक्त से भी कम नहीं . हिन्दू धर्म , वेद – पुराणों के उनके ज्ञान को देखकर कोई कल्पना नहीं कर सकता कि ऐसा कृष्णभक्त मुसलमान भी होगा . भारतेन्दुजी ने उनकी इसी विशिष्टता से प्रभावित होकर ' इन मुसलमान हरिजनन पै कोटिन हिन्दू वारिये ' वाली बात कही है . भक्ति व कविता दोनों में सबसे आवश्यक है अहंकार का लोप . अपनी इसी विशिष्टता के कारण हिन्दू – मुसलमान सभी भक्त कवियों में रसखान विशेष स्थान के अधिकारी हैं.

स्वाभाविकता रसखान की कविता में पूर्ण आभा के साथ विद्यमान है. रसखान की भक्ति उनकी भावनाओं का सहज स्पंदन है . उनकी भक्ति कसी शास्त्रीय पद्धति पर आधारित नहीं अतः किसी सम्प्रदाय विशेष में रखकर उनको परखना उचित नहीं है . उन्होंने तो सांप्रदायिक नीति या दार्शनिक मतवाद से स्वयं को सदैव अलग रखा .

श्रृंगार और भक्ति के साथ – साथ कवि ने प्रेम – तत्व का भी विवेचन किया है . यह प्रेम एकांगी , एकपक्षीय व एकान्तिक है . इसमें जगत के उत्थान – पतन , जीवन की विविध स्थितियों का तो चित्रण नहीं क्योंकि वह प्रबंधकाव्य में ही संभव है . तथापि इनके काव्य की प्रत्येक पंक्ति प्रेम की स्वच्छ , मधुर और उदात्त अनुभूति से ओतप्रोत है . इनके द्वारा प्रतिपादित प्रेम आदर्शों से अनुप्राणित है. भक्ति के साथ – साथ प्रेम की सुशीतल यह धारा भी अन्तःसलिला के रूप में इनके काव्य में प्रवहमान है . प्रेम को ही आनंद का कर्ता मानते हुए उसके वास्तविक स्वरुप को समझाने का प्रयास उन्होंने ' प्रेम – वाटिका ' में किया . ' प्रेम – वाटिका ' में प्रेम विषयक 52 दोहे संग्रहित हैं , जिनमें उनके प्रेम सम्बन्धी सिद्धांतों का वर्णन है . उन्होंने शास्त्र वद पढने की अपेक्षा प्रेम को श्रेष्ठ बताया . .

उन्होंने प्रेम को शुद्ध , कामना रहित माना. प्रेम के पंथ को उन्होंने सीधा भी माना पर कठिन भी .

कमल तंतु सों छीन अरु , कठिन खडग की धार |

अति सूधो टेढो बहुरि , प्रेमपंथ अनिवार ||

विषयानंद और आत्मानंद प्रेम के लौकिक तथा दिव्यरूप हैं . उनसे पहले इस प्रकार का प्रेम – वर्णन नहीं हुआ . हाँ उनके बाद घनानन्द , बोधा , आलम आदि ने इसी मार्ग पर चलने का प्रयास किया यह तो पहले ही बताया गया है. रसखान का प्रेम – दर्शन हिंदी साहित्य को उनकी अविस्मरणीय देन है. इनका मूल निवेद्य प्रेम ही है . यही प्रेम निष्ठा भी है , स्वप्न भी है , संकल्प भी , प्रणय भी , उमके प्राणों का स्पंदन भी और उनकी आस्था भी यही प्रेम है .

माधुर्य – भक्ति को श्रेष्ठ माना गया है . भक्त और भगवान् के वैयक्तिक संबंधों की सांद्रता एवं घनिष्ठता इसका आधार है . इसीको लक्ष्य कर पं . विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने उन्हें प्रेममार्गी मानते हुए ‘ प्रेमोन्मंग का कवि ‘ ठहराया है . तन्मयता , एकनिष्ठता , दृढ आस्था व् आत्मसमर्पण इनकी भक्ति की पराकाष्ठ के द्योतक हैं.

हिंदी साहित्य में नारी – सौंदर्य का विशद चित्रण हुआ . किन्तु रसखान का वैशिष्ट्य उनके पुरुष – सौन्दर्य के चित्रण में है . उन्होंने कृष्ण भक्तों की तरह बाल कृष्ण के सौन्दर्य का चित्रण कम , युवा कृष्ण के सौन्दर्य का अधिक चित्रण किया है. उनका मन गोपिकारमण कुंजबिहारी कृष्ण के रूप में ही अधिक रमा है . यह हिंदी साहित्य को रसखान की महत्वपूर्ण देन है . नारी के साथ – साथ युवा कृष्ण के मनो मुग्धकारी विस्तृत रूप का चित्रण करनेवाले रसखान का मन नायिका की अपेक्षा नायक के चित्रण में अधिक रमा है .

‘ वा मुरली मुरलीधर के अधरान धरी , अधरान धरौंगी कहनेवाले रसखान को कृष्ण ही नहीं अपितु कृष्ण की प्रत्येक वस्तु जैसे कि उनकी लकुटिया , कमरिया , बाँसुरी यहाँ तक कि उनका लीलाधाम ब्रज , उसकी संस्कृति , पर्व- त्यौहार , होली

, वसंत , तीज – पूजा , अर्चना , झूला , फाग – पाग , सब सुन्दर है. ब्रज के लोकजीवन का उल्लास , आह्लाद तो रसखान की नस – नस में समा गया लगता है .

इस तरह प्रेम व् भक्ति की पवित्र धारा रसखान के काव्य में प्रवाहित है. वे कृष्णभक्ति काव्यधारा , स्वच्छंद प्रेममार्गी काव्यधारा और श्रृंगार – रस की रससिद्धावस्था तक पहुंचे कवियों में विशिष्ट स्थान रखते हैं. अनुभूति की अकृत्रिम अभिव्यक्ति रसखान के काव्य का आदर्श है. फिर भी रमणीयता व सौन्दर्यबोध के ज़बरदस्त योग ने इनके काव्य को आकर्षक बना दिया है .

कलापक्ष की दृष्टि से भी उनका काव्य सशक्त है . रसखान की भाषा सरस , स्वाभाविक , प्रसाद गुण व माधुर्य - प्रवाह से सहज ही युक्त है . आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार , "शुद्ध ब्रज भाषा का जो चलतापन और सफाई इनकी और घनानंद की रचनाओं में है , वह अन्यत्र दुर्लभ है . 2.

भावानुसारिणी भाषा इनकी महत्वपूर्ण विशिष्टता है. मुहावरों , कहावतों के प्रयोग ने उनकी भाषा को प्रौढ़ता प्रदान की है. ब्रजभाषा के प्रयोग – नैपुण्य की दृष्टि से रसखान का काव्य अत्यंत महत्वपूर्ण है . भाषा की दुरूहता को तो नहीं , हाँ साहित्यिकता को अपनाकर भीं उसके स्वाभाविक लोक प्रचलित रूप को उन्होंने सुरक्षित रक्खा है . साथ ही अन्य भाषा – बोलियों जैसे कि अवधी , अपभ्रंश , राजस्थानी तथा अरबी – फ़ारसी के शब्दों को भी ब्रजभाषा की प्रकृति के अनुकूल रूप में ढालकर उन्होंने प्रयुक्त किया है. एक उदहारण के रूप में – ' प्रेम – रूप दर्पन अहो , रचै अजूबो खेल | ' को देखा जा सकता है .

उनकी रचनाओं में भाव – गाम्भीर्य है पर शब्दाडम्बर वहां कतई नहीं है. यह उनकी भाषा का वैशिष्ट्य है. इनकी सहायता से ब्रजभाषा का प्रामाणिक व्याकरण बनाये जा सकने की बात को अनेक विद्वान आचार्य मानते हैं . यह भी भाषा के क्षेत्र में इनकी एक महत्वपूर्ण देन है. डॉ. चन्द्रबली पाण्डेय ने तो यहाँ तक ख

दिया कि ' रसखान की भाषा के बारे में मौन रहना ही अच्छा है . बोलती भाषा के बारे में बोलना ठीक नहीं होता .'

मन को हर लेनेवाले मनहरण और भावों में मस्त कर देनवाले मत्तगयन्द छंद का जैसा प्रयोग रसखान कर पाए हैं , वैसा बहुत कम रचनाकार कर पाए हैं.उन्होंने अलंकारों को सप्रयास सजाया नहीं है , न ही कविता को अलंकारों के बोझ से दबाया . अन्य कवियों की तरह अलंकारों का मोह भी उन्होंने नहीं किया . फिर भी रूपक , यमक , श्लेष , उपमा ,पुनरुक्ति , अनुप्रास , उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों के अनेक उदहारण उनकी रचनाओं में दृष्टिगोचर होते हैं . अर्थ – ध्वनन या ध्वन्यात्मकता में उनकी बराबरी के रचनाकार कम ही हैं. कर्कश ध्वनियों के प्रयोग से वे बचे हैं. सुमधुर ध्वनियों के प्रयोग में उन्हें प्रावीण्य प्राप्त है. अनुप्रास का तो उन्हें राजा ही कहा जाना चाहिए . अलंकरण – प्रवृत्ति के अभाव के बावजूद मनोवेगों की तीव्रता , भावों की सहजता से युक्त आयासहीन अभिव्यक्ति उनकी विशिष्टता है.

आत्मतत्व उनके काव्य की विशिष्टता है . संगीतात्मकता , अनुभूति की तीव्रता , तन्मयता और आत्मनिष्ठा ने इनके काव्य को सुमधुर व गेय बना दिया है .

अभिव्यंजना – सामर्थ्य की दृष्टि से भी वे पूर्ण सफल हुए हैं. उनके काव्य में सूर की सरसता , नंददास का चटकीलापन , मीरा जैसी अनन्यता व भावमयता विद्यमान है. परिमाण में कम होने पर भी भाव तन्मयता , अनुभूति की तीव्रता , व निश्छल अभिव्यक्ति की दृष्टि से उनका साहित्य किसी प्रकार भी किसी से कम नहीं माना जा सकता .

इस तरह प्रचुर परिमाण में न होने पर भी सरसता , सजीवता व तन्मयता की दृष्टि से इनका हिंदी साहित्य में विशिष्ट स्थान है. महाकवि सूर , तुलसी , बिहारी तो अपने विशिष्ट गुणों के कारण हिंदी साहित्य के अनमोल रत्न हैं हीं पर अपनी विशिश्ताओं के कारण रसखान भी रसखान ही हैं. निष्कर्ष रूप में डॉ. चंद्रशेखर

पाण्डेय के मत से पूर्णतः सहमत हूँ , "भिन्न – भिन्न दृष्टियों से देखने पर ज्ञात होता है कि रसखान हिंदी साहित्य में विशेष और पृथक स्थान रखते हैं. ख्याति की दृष्टि से , पंडित व साधारणजनों में प्रतिष्ठा पाने की दृष्टि से तथा भारतीय आत्मा में रच बस जाने की दृष्टि से रसखान हिंदी साहित्य में एक विशेष महत्वपूर्ण स्थान के अधिकारी हैं . ये हिंदी काव्य – गंगा में सबसे पृथक ऐसे ज्योतिपिंड हैं , जिनकी ज्योति भारतखंड को तब तक प्रकाशित करती रहेगी , जब तक कि हिंदी साहित्य का अस्तित्व रहेगा . 3.

<u>सन्दर्भ – सूची :</u>

1. घनानन्द और स्वच्छंद काव्य – धरा , मनोहरलाल गौड़ , (परिचय – विश्वनाथ प्रसाद मिश्र) , पृ . सं . 5 .

2 . "हिंदी साहित्य का इतिहास , रामचंद्र शुक्ल , पृ . सं . 192 .

3. रसखान और उनका काव्य , डॉ. चंद्रशेखर पाण्डेय , पृ . सं . 106